पृथ्वी के रहस्य

आईका सुबोटा

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

पृथ्वी के रहस्य : *आईका सुबोटा*

Secrets Of The Earth : *Aika Tsubota*

अनुवाद: अरविन्द गुप्ता

जनवाचन बाल पुस्तकमाला के तहत
भारत ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित

Copyrights : SAVE THE SEA
Campaign Committe, Japan

रेखांकन : आईका सुबोटा
ग्राफिक्स : अभय कुमार झा

चतुर्थ संस्करण : वर्ष 2007

मूल्य : 15 रुपये

Published by Bharat Gyan Vigyan Samiti
Basement of Y.W.A. Hostel No. II, G-Block Saket, New Delhi - 110017
Phone : 26569943, Fax : 26569773,
Email: bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com
Printed at Sun Shine Offset, New Delhi - 110018

पृथ्वी के रहस्य

आईका सुबोटा

जन्म नवम्बर 26,1979 हिराटा सिटी, शिमाने, जापान
मृत्यु दिसम्बर 27,1991 (छठवीं कक्षा, निशानो प्राथमिक स्कूल)

पृथ्वी के रहस्य

बारह वर्ष की जापानी लड़की आईका ने *पृथ्वी के रहस्य* नाम की किताब जब लिखी तब वो छठी क्लास में थी। दो महीने के अपने स्कूली शोध को उसने इस किताब का रूप दिया। किताब इतनी आकर्षक और रोचक थी कि पहली कक्षा के बच्चों को भी उसमें बड़ा मज़ा आया। उन्होंने उसे बड़ी रुचि से पढ़ा और इससे पर्यावरण के प्रति उनकी चेतना बढ़ी। इस पुस्तक को खत्म करने के तुरंत बाद जब आईका सुबह को सोकर उठी तो उसके सिर में ज़बरदस्त दर्द उठा। 26 दिसम्बर 1991 को उसका देहांत हो गया।

आईका ने बड़ी खूबसूरती से पर्यावरण के तमाम मुद्दों को इस किताब में संजोया है। पर्यावरण का मतलब है अधिक से अधिक जैविक किस्मों का संरक्षण और साथ–साथ अम्लीय–बारिश और ओज़ोन छतरी में छेद से दुनिया को बचाना। पर्यावरण संबंधी समस्याओं के कारणों को भी, इस पुस्तक में, बड़े सुंदर कार्टूनों के ज़रिए समझाया गया है। किताब में, आईका ने विकसित और विकासशील देशों के बीच में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की भी ज़ोरदार अपील की है। आईका चाहती थी कि दुनिया के सभी लोग प्रदूषण की समस्याओं को समझें और पर्यावरण को बचाने के आंदोलनों के साथ जुड़ें। सारी दुनिया में लोग फिज़ूलखर्ची और अपनी बेकार की ज़रूरतों पर लगाम लगाएं। वे कम चीज़ें फेंकें जिससे कि विश्व में कचरे और मलबे के ढेर कम हों।

मुख्य पात्र

रूमी

छठवीं की छात्रा पढ़ने
का बहुत शौक

आईची

छठवीं का छात्र
बहुत जिज्ञासु

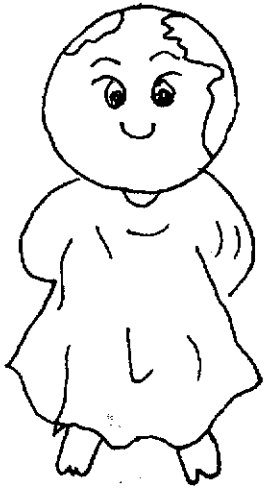

पृथ्वी

पृथ्वी एक अद्‌भुत पात्र है जो जादुई तरीके से
पुस्तकालय से
लाई गई किताब में से निकल पड़ता है।
पृथ्वी को धरती के बारे में जो कुछ भी जानने लायक है वो सब पता है।

पृथ्वी के इतिहास की खोज

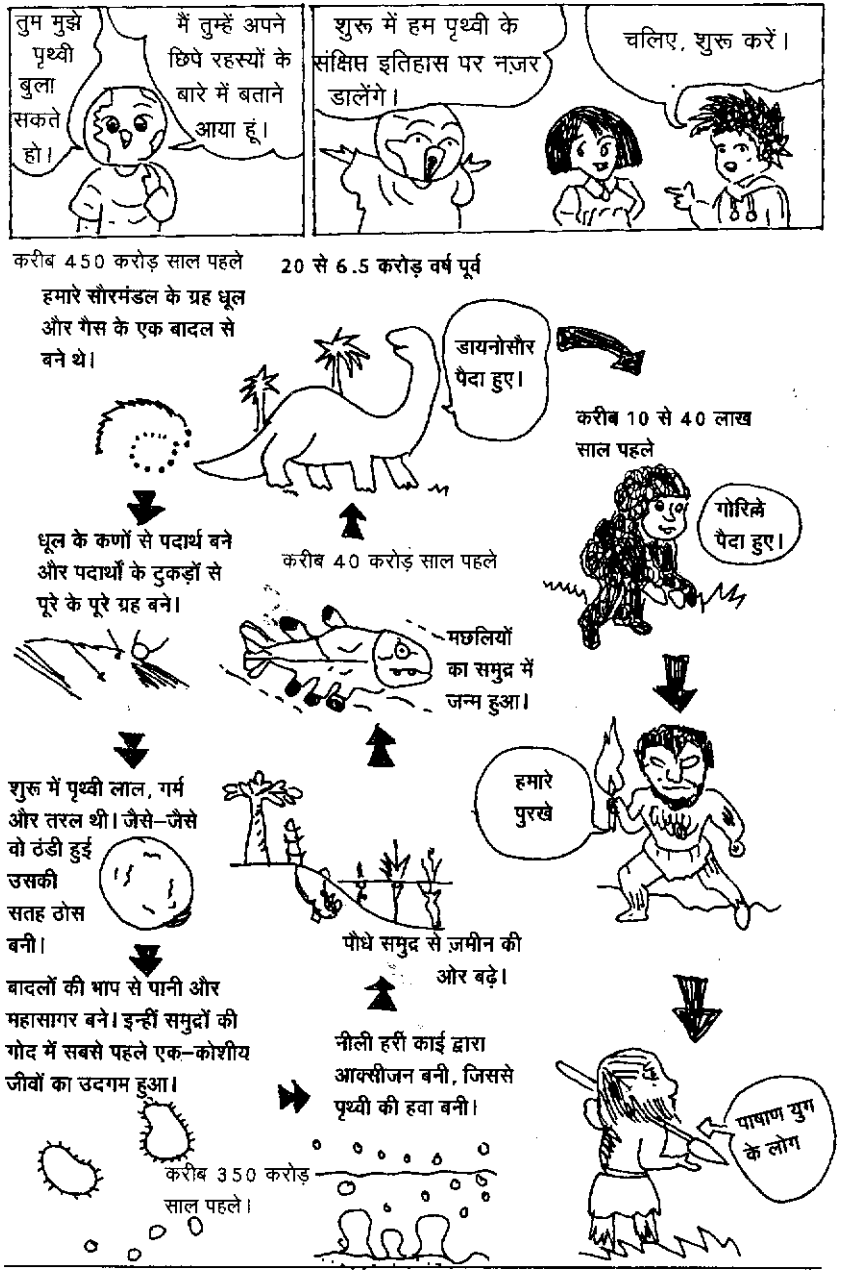

प्रकृति में संतुलन

मिट्टी पर ही जीवन टिका है

40 करोड़ साल पहले पत्थरों के टुकड़े हुए और उनके चूरे और मरे जीवों एवं पौधों से मिट्टी बनी। पृथ्वी पर पैदा सभी तरह के पौधों को अपना पोषण मिट्टी से ही मिलता है। मिट्टी में अरबों-खरबों जीवाणु होते हैं। उनसे ही मिट्टी उर्वर और उपजाऊ बनती है। मिट्टी की उर्वरता के कारण ही आज पृथ्वी पर जीवन फल-फूल रहा है।

पेड़ों की जड़ें मिट्टी में गहराई तक जाती हैं और पोषक तत्वों को चूसती हैं। तभी पेड़ों में पत्ते और फल-फूल लगते हैं। मिट्टी में पोषक तत्वों के अलावा हवा, पानी, रेत, काली मिट्टी और सड़ी पत्तियां भी मिली होती हैं। इन्हीं वनस्पतियों पर ही सारे जीव अपने भोजन के लिए निर्भर होते हैं।

काम करती मिट्टी!

मिट्टी पर्यावरण की रक्षा करती है।

मिट्टी में मिले मरे पौधों और जीवों को तोड़कर छोटे जीवाश्म उनसे पोषक तत्व बनाते हैं। इन्हें पेड़ों की जड़ें सोख लेती हैं।

उपजाऊ मिट्टी में छोटे-छोटे कण आपस में जुड़ जाते हैं और उनमें मौजूद जीवाणु पौधों की जड़ों को पोषण प्रदान करते हैं।

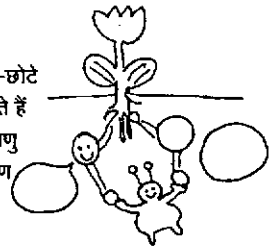

मिट्टी से गुज़रने पर पानी छनकर साफ़ हो जाता है और उसमें से बैक्टीरिया और अन्य अशुद्धियां दूर हो जाती हैं।

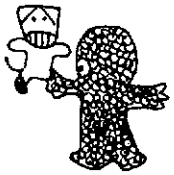

मिट्टी ज़हरीले पदार्थों को उदासीन बनाकर उनका असर खत्म कर देती है।

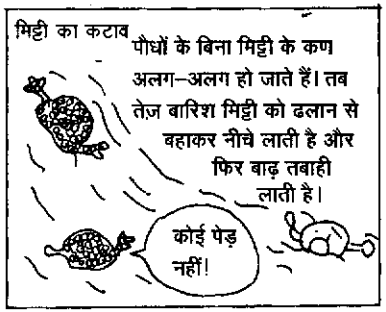

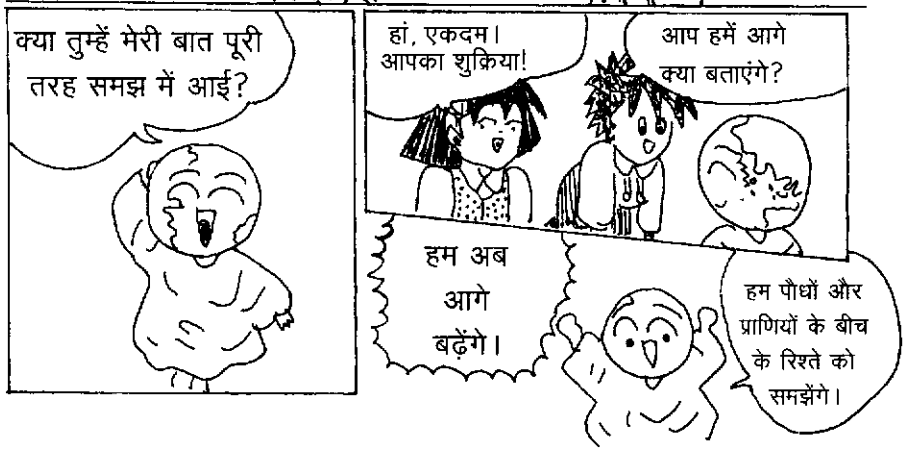

सूर्य के प्रकाश से बने कार्बनिक यौगिक (औरगैनिक कंपाउंड)

प्रकाश-क्रिया में, पत्तियों का हरा क्लोरोफिल, सूर्य के प्रकाश को सोखता है। उससे पानी विखंडित होता है और उर्जा बनती है।

इस क्रिया में आक्सीजन पैदा होती है, जो हर प्राणी के सांस लेने के लिए ज़रूरी है।

प्रकाश क्रिया में पैदा हुई ऊर्जा, मांड के परमाणु बनाने के काम आती है। इसके लिए प्रकाश की ज़रूरत नहीं होती है। इसलिए इसे अंधेरी-क्रिया कहते हैं। यह मांड पौधों का भोजन होता है।

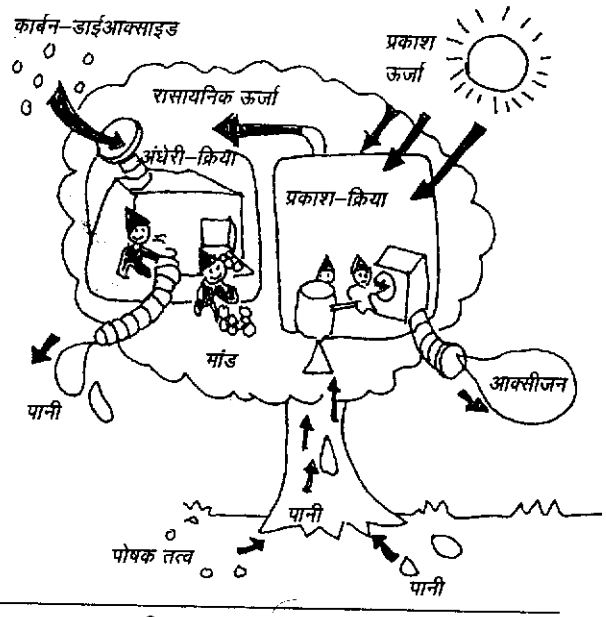

समझा! सचमुच एक चित्र हज़ारों शब्दों से ज़्यादा समझाता है!

कुछ जानवर, पौधे खाकर अपनी उर्जा की आवश्यकता पूरी करते हैं।

पौधों के बिना कोई भी जीव ज़िंदा नहीं बच पाता।

पृथ्वी का पूरा जीवन सूर्य के प्रकाश पर ही निर्भित है। केवल पौधों में ही सूर्य के प्रकाश से भोजन बनाने की क्षमता है।

पहले मिट्टी और अब पौधे, मुझे इनके रहस्यों के बारे में पता ही न था।

पौधों के बाद अब हमें जानवरों के बारे में भी कुछ जानना चाहिए!

जानवर भी, एक–दूसरे से, एक बड़े जटिल जाल में जुड़े हैं। क्या तुम उनके बारे में कुछ जानना चाहोगे?

ज़रूर!!

प्रकृति में सभी जीवों का एक–दूसरे से संबंध है – इनमें कुछ उत्पादक हैं, कुछ ग्राहक और कुछ सफ़ाई करने वाले। लगता है तुम्हें इनके बारे में पहले ही से पता है?

नहीं! सच में हमें नहीं मालूम है!

हमें पता है कि हरे पौधे प्रकाश और मिट्टी के पोषक तत्वों से बढ़ते हैं। शाकाहारी जीव पौधे खाते हैं। मांसाहारी जीव, शाकाहारी जीव खाते हैं। पौधे उत्पादक हैं। वे सूर्य के प्रकाश और मिट्टी के तत्वों से खाना बनाते हैं।

सभी प्राणी और जानवर ग्राहक हैं क्योंकि वे उत्पादकों और दूसरे ग्राहकों को खाते हैं। इस कड़ी के अंत में होते हैं सफ़ाई करने वाले – जो मरी चीज़ों से पोषक तत्व बनाते हैं। इनमें बैक्टीरिया और फफूंद प्रमुख हैं। इनके द्वारा बनाए पोषक तत्वों से मिट्टी उपजाऊ बनती है। पेड़ों की जड़ें इन तत्वों को सोखती हैं। इस प्रकार यह चक्र दुबारा शुरू हो जाता है।

सभी जानवरों का आपस में रिश्ता है!

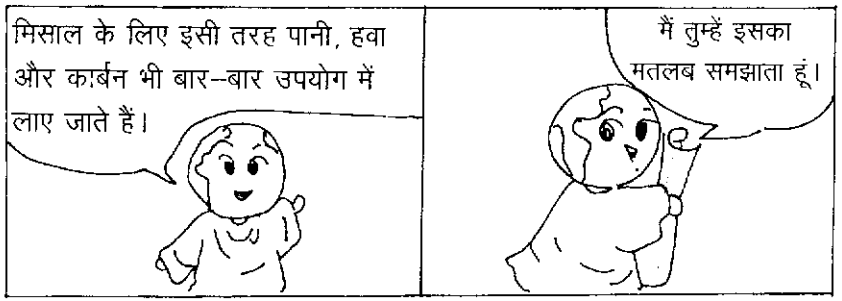

(1) जल–चक्र

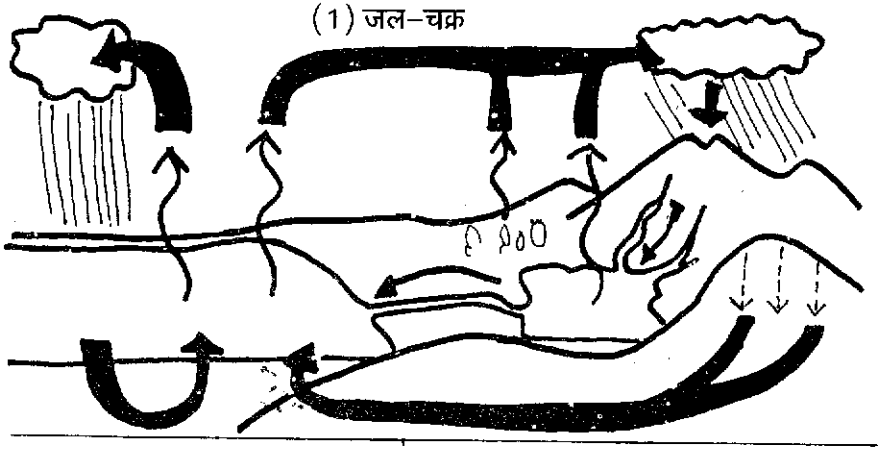

(2) हवा की संवाहक धाराएं

ज़मीन के पास की हवा, गर्म होकर हल्की हो जाती है और ऊपर उठती है। फिर ठंडी हवा, गर्म हवा का स्थान ले लेती है। ऊंचाई पर जाकर गर्म हवा ठंडी होकर दुबारा नीचे आती है। इस प्रकार हवा का चक्र पूरा होता है। इसे हम तेज़ हवा के रूप में महसूस कर सकते हैं।

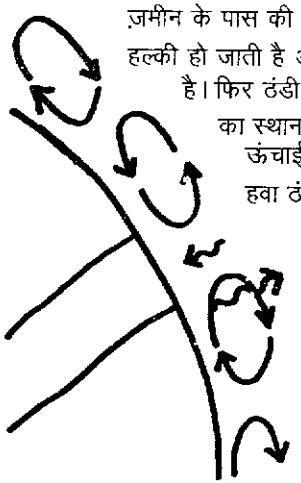

(3) हवा के बहाव के नमूने

उत्तरी गोलार्ध में हवा के तीन मुख्य बहाव हैं:

व्यापारिक हवाएं (ट्रेड विंडस)

पश्चिमी हवाएं

पूर्वी हवाएं

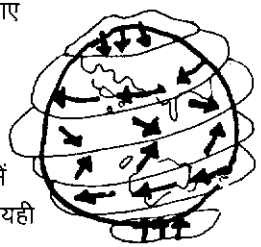

दक्षिणी गोलार्ध में में भी लगभग यही स्थिति है।

(4) कार्बन–चक्र

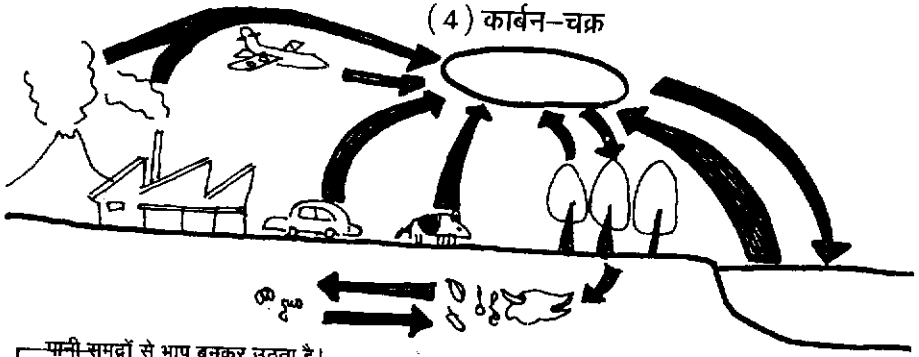

पानी समुद्रों से भाप बनकर उठता है। ठंडा होने पर उसके बादल बनते हैं। बारिश और स्नो के रूप में पानी दुबारा धरती पर वापिस आता है।

हवा के बहाव को तो मैं समझ पाया....

परंतु कार्बन.....???

ठोस कार्बन पौधे के शरीर में तब तक रहता है जब तक पौधा मर नहीं जाता या फिर उसे कोई खा नहीं लेता है। पौधों और जानवरों को मरने के बाद बैक्टीरिया और फफूंद उसे तोड़ते हैं और कार्बन को दुबारा हवा में छोड़ते हैं। इस प्रकार कार्बन का चक्र दुबारा शुरू हो जाता है।

कार्बन–चक्र, ऊर्जा पर निर्भर करता है। हमारे शरीर में ऊर्जा कार्बनिक कंपाउंड के रूप में संचित होती है। इसका चक्र कार्बन–डाईआक्साइड से शुरू होता है। हरे पौधे, फोटोसिंथेसिस द्वारा, हवा में मौजूद कार्बन से भोजन बनाते हैं।

प्रकृति वाकई में अद्‌भुत है!

करोड़ों सालों तक यह सभी चक्र आराम से चलते रहे। परंतु अब हमारी पृथ्वी गंभीर मुसीबत में है....

आज पृथ्वी की हालत!!

जीवन का आरंभ समुद्रों में हुआ....

परंतु आज समुद्र भारी संकट में हैं!

सालों तक समुद्रों में फास्फेट युक्त डिटरजेंट और कारखानों का ज़हरीला पानी फेंकने से आज समुद्रों की हालत बहुत खराब हो चली है। आज लाल–नीले, ज्वार–भाटे कई तटीय क्षेत्रों को प्रभावित कर रहे हैं। लाल–नीले, ज्वार–भाटे उत्पन्न करने वाले समुद्री प्लैंक्टन एक तरह का ज़हर पैदा करते हैं। इससे सभी मछलियां मर जाती हैं और फूड–चेन पूरी तरह तहस–नहस हो जाती है।

और फिर समुद्री जहाज़ों और टैंकरों से निकला तेल...

मौत के काले कंबल की तरह समुद्र के पानी पर फैल जाता है और चिड़ियों और अन्य जीवों पर तबाही लाता है।

आपकी बातें सुनकर हमें खाड़ी युद्ध की याद आ रही है ....
उस समय फ़रास की खाड़ी में लाखों टन तेल बह गया था।
जीवन समुद्रों में आरंभ हुआ....
परंतु आज लोग समुद्रों में ज़हर फेंक रहे हैं और उन्हें दूषित कर रहे हैं।
....
इसके अलावा अन्य समस्याएं भी हैं...

क्या तुमने ऍसिड–रेन के बारे में सुना है?
हां!
पर वो तो यूरोप की समस्या है। उससे हमें क्या लेना–देना!
ऐसा तुम क्यों सोचते हो!!
जलते कोयले और तेल का धुंआ, नाईट्रोजन और गंधक से भरा होता है ।
यह चीज़ें वर्षा में घुल जाती हैं और ऍसिड–रेन के रूप में बरसती हैं!
वैसे बारिश के पानी में कुछ अम्ल तो होता ही है...
परंतु आजकल वर्षा का पानी तो एकदम नींबू का रस बरसने के समान है।
लिटमस पेपर
अम्लीय–वर्षा जहां भी बरसती है, तबाही लाती है। उससे नदियों और झीलों की मछलियां मर जाती हैं, हरे–भरे पेड़ सूख जाते हैं और उपजाऊ मिट्टी बंजर हो जाती है।

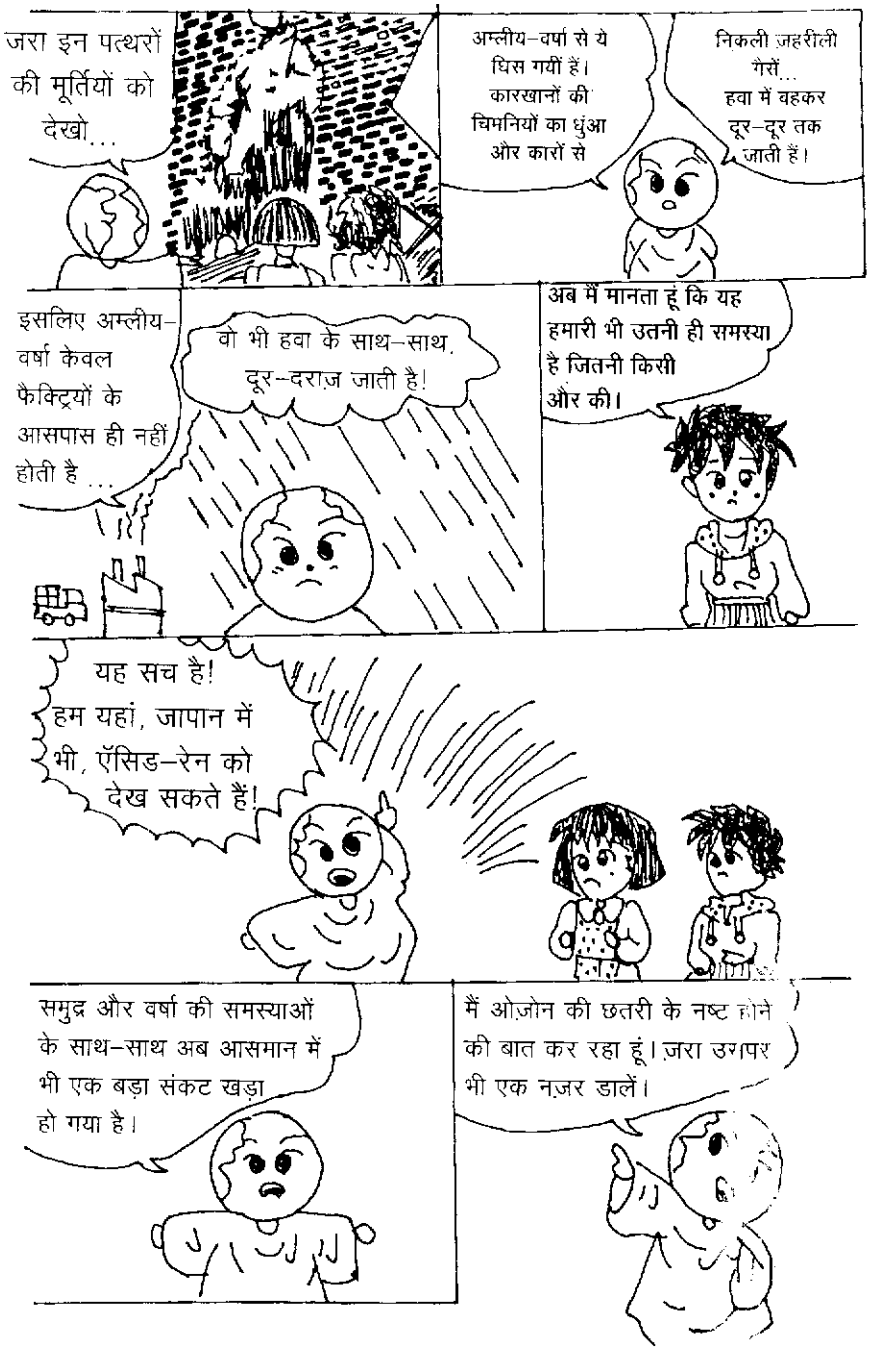
जरा इन पत्थरों की मूर्तियों को देखो...
अम्लीय–वर्षा से ये घिस गयीं हैं। कारखानों की चिमनियों का धुंआ और कारों से
निकली ज़हरीली गैसें... हवा में बहकर दूर–दूर तक जाती हैं।
इसलिए अम्लीय–वर्षा केवल फैक्ट्रियों के आसपास ही नहीं होती है ...
वो भी हवा के साथ–साथ दूर–दराज़ जाती है!
अब मैं मानता हूं कि यह हमारी भी उतनी ही समस्या है जितनी किसी और की।
यह सच है! हम यहां, जापान में भी, ऍसिड–रेन को देख सकते हैं!
समुद्र और वर्षा की समस्याओं के साथ–साथ अब आसमान में भी एक बड़ा संकट खड़ा हो गया है।
मैं ओज़ोन की छतरी के नष्ट होने की बात कर रहा हूं। ज़रा उसपर भी एक नज़र डालें।

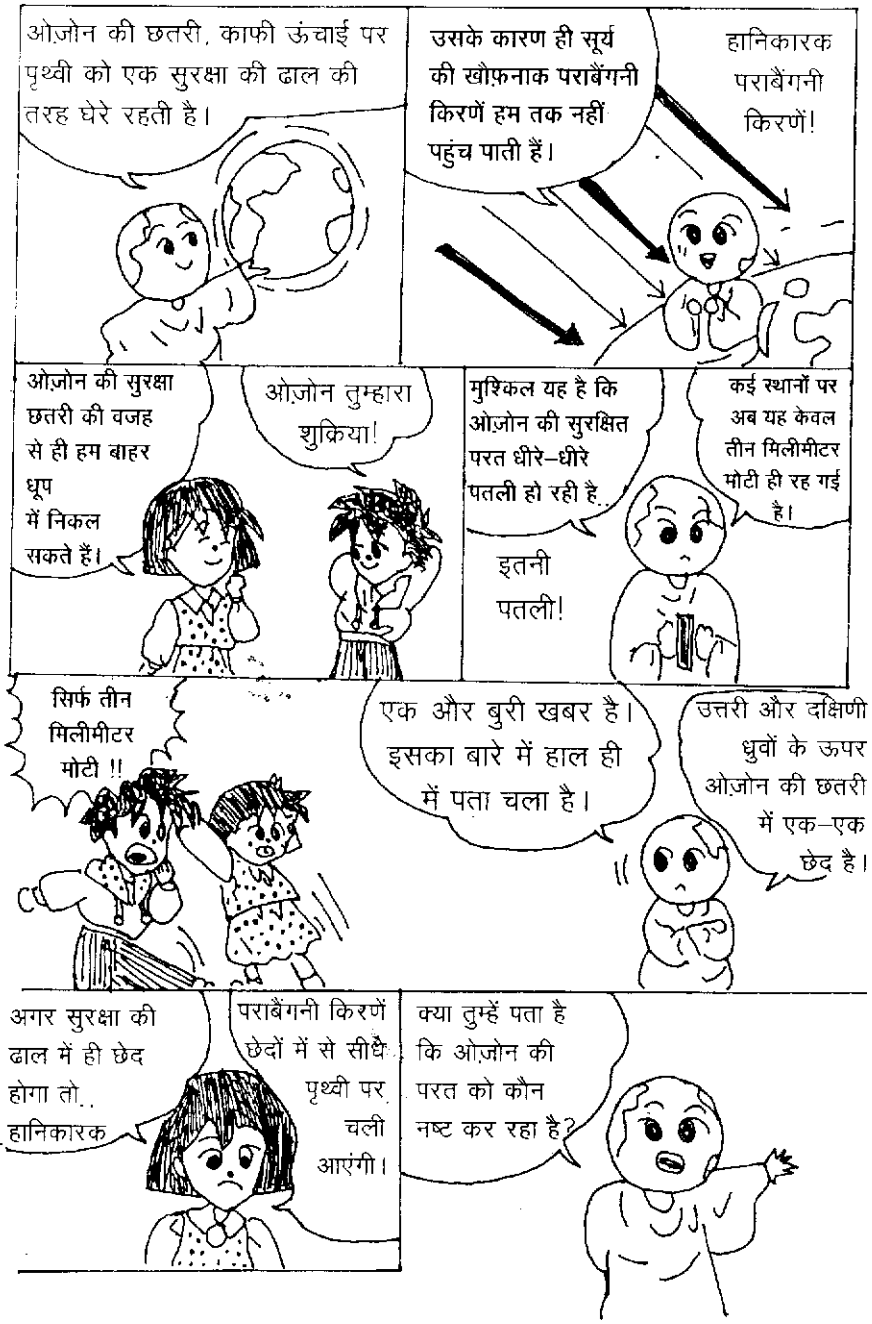
ओज़ोन की छतरी, काफी ऊंचाई पर पृथ्वी को एक सुरक्षा की ढाल की तरह घेरे रहती है।
उसके कारण ही सूर्य की खौफ़नाक पराबैंगनी किरणें हम तक नहीं पहुंच पाती हैं।
हानिकारक पराबैंगनी किरणें!
ओज़ोन की सुरक्षा छतरी की वजह से ही हम बाहर धूप में निकल सकते हैं।
ओज़ोन तुम्हारा शुक्रिया!
मुश्किल यह है कि ओज़ोन की सुरक्षित परत धीरे–धीरे पतली हो रही है.
इतनी पतली!
कई स्थानों पर अब यह केवल तीन मिलीमीटर मोटी ही रह गई है।
सिर्फ तीन मिलीमीटर मोटी !!
एक और बुरी खबर है। इसका बारे में हाल ही में पता चला है।
उत्तरी और दक्षिणी ध्रुवों के ऊपर ओज़ोन की छतरी में एक–एक छेद है।
अगर सुरक्षा की ढाल में ही छेद होगा तो.. हानिकारक
पराबैंगनी किरणें छेदों में से सीधे पृथ्वी पर चली आएंगी।
क्या तुम्हें पता है कि ओज़ोन की परत को कौन नष्ट कर रहा है?

सी एफ सी मुझे पता हैं!

(क्लोरोफ्लोरो कार्बन) सी एफ सी, फ्रिज और ऍअर-कंडीशनर में इस्तेमाल होते हैं।

परंतु आसमान की ऊपरी छतरी स्ट्रैटोस्फीयर में ये ओज़ोन का कत्लेआम शुरू कर देते हैं।

सी एफ सी किस तरह ओज़ोन को नष्ट करते हैं?

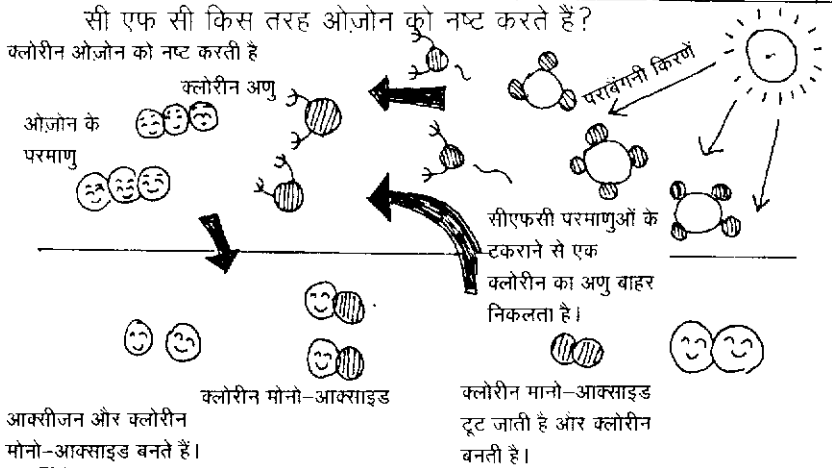

ओज़ोन की छतरी के बिना, सूर्य की विनाशकारी किरणों से बचने के लिए हमें गहरी सुरंगों में, या फिर पानी के नीचे रहना पड़ेगा। परंतु यह कोई हल नहीं है। जब कोई भी ज़मीन के ऊपर नहीं होगा तब हम भला कब तक ज़मीन के नीचे रह पाएंगे।

ओफ!

एक और बुरी खबर है (ट्रापिकल रेन फारेस्ट) घने जंगलों के बारे में।

ये जंगल भू-मध्य रेखा के पास एशिया, अफ्रीका और दक्षिणी अमरीका में स्थित हैं। इन जंगलों का क्षेत्रफल केवल 6 प्रतिशत है परंतु इनमें दुनिया के आधे से अधिक पौधे और जीव पाए जाते हैं। यहां जानवरों की भरमार है।

हज़ारों तरह की चिड़िए पेड़ों पर कलरव करती हैं और असंख्यों कीड़ें ज़मीन पर रेंगते हैं।

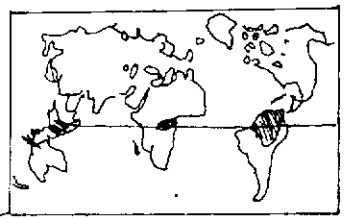

रेन-फारेस्ट, भूमध्य रेखा के पास पाई जाती हैं।

कई आदिवासी कबीले भी यहां अपना जीवनयापन करते हैं।

और इन वनों में रहते हैं।

जंगल, जीवों और पौधों की भिन्न-भिन्न प्रजातियों का खज़ाना है!

वाह! क्या बात है!

पेड़ कट रहे हैं!

जंगलों में कटते पेड़

पैसों के लिए इन हरे-भरे पेड़ों को काटा जाता है और फिर इन्हें जापान और अन्य देशों को भेजा जाता है।

साथ में खेती के लिए, बहुत बड़े पैमाने पर जंगलों को जलाया जाता है।

कितनी बरबादी है!

व्यापार और खेती के लिए हर साल 168 लाख हेक्टर जंगलों को नष्ट कर दिया जाता है। ये आस्ट्रिया, डेनमार्क और नेदरलैंड के क्षेत्रफल से भी अधिक है!

तुम सोचते होगे कि इन घने जंगलों की मिट्टी बहुत उपजाऊ होती होगी। परंतु ऐसा नहीं है। इन वनों में पोषण तत्व बड़ी तेज़ी से पेड़ों द्वारा चूसे जाते हैं। इससे वहां की ज़मीन काफ़ी बंजर हो जाती है।

अगर यहां पेड़ कटेंगे तो उन्हें दुबारा उगने में बहुत लंबा समय लगेगा और इससे पेड़ों की तमाम किस्में भी नष्ट हो जाएंगी।

तब क्या होगा...

अगर वन नष्ट होंगे तब?

जब ये जंगल नष्ट होंगे तो..

. इन वनों में रहने वाले जीव भी खत्म होंगे, क्योंकि उनके रहने के लिए अब कोई जगह न होगी।

तब लोगों का ज़िंदा रहना भी बहुत मुश्किल हो जाएगा।

जंगलों का सफ़ाया होने से तेज़ बारिश से मिट्टी कटेगी और बाढ़ आएगी।

यह हालत है!

...!!

हम क्या मद्द कर सकते हैं?

मुझे खुशी है कि तुमने यह सवाल पूछा!

बहुत सारे जंगल विकासशील देशों में स्थित हैं। इन देशों को पैसों के लिए अपने जंगलों को काटने की ज़रूरत पड़ती है। इसी तरह ये देश अपना विकास कर सकते हैं। यहां पर बहुत से लोग जंगल जलाकर, ज़मीन साफ़ करते हैं और फिर उसपर खेती करते हैं।

अगर वहां लोग जंगल नहीं काटेंगे तो उनका विकास रुक जाएगा और फिर वहां लोग ज़िंदा कैसे रहेंगे।

साथ मिलकर पृथ्वी को बचाना

कुछ अंतर्राष्ट्रीय एन जी ओ समूह हैं जो ग़ैरसरकारी हैं। वे संयुक्त राष्ट्र से भी नहीं जुड़े हैं पर लगातार सहयोग करते हैं। वे सारी दुनिया में काम करते हैं।

लोक–चेतना समूह, स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय, पर्यावरण संबंधी समस्याओं की जांच–पड़ताल करते हैं। वे इस जानकारी को सारी दुनिया में फैलाते हैं जिससे कि लोगों को असलियत का पता चल सके।

व्यक्तिगत स्तर पर भी लोग पर्यावरण को बचाने के लिए कुछ–न–कुछ कर सकते हैं।

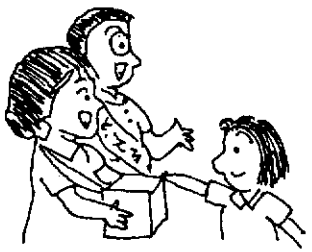

पर्यावरण के मुद्दों को लेकर जनआंदोलन स्थानीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों स्तरों पर सक्रिय हैं।

सभी देशों की सरकारें अब, पृथ्वी को बचाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय समझौते और नियम–कानून बना रही हैं।

पर्यावरण की समस्याओं के हल के लिए अनेकों समझौते हुए हैं।

अंतर्राष्ट्रीय महत्व के वैटलैंडस पर रामसार समझौता

यह किसी जल–स्रोत के पास स्थित क्षेत्र जैसे अभयारण्य, सैन्चुरी – जहां पशु–पक्षी रहते हैं उनकी रक्षा करता है।

राष्ट्रीय सीमाओं से पक्षी पलायन पर समझौता

इस पर जापान, अमरीका, आस्ट्रेलिया, चीन और रूसी गणतंत्र ने हस्ताक्षर करे हैं। यह समझौता राष्ट्रीय सीमाओं से पलायन करते पक्षियों की रक्षा करता है।

ओज़ोन छतरी के संरक्षण पर समझौता

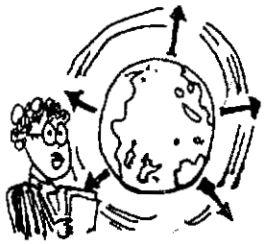

इसमें ओज़ोन परत के अध्ययन और ओज़ोन को नष्ट करने वाले रासायनों को रोकने की ज़िम्मेदारी ली गई है।

समुद्री कानून के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ का समझौता

दुनिया के सभी महासागरों के संरक्षण और उनके प्रदूषण को कम करने के बारे में समझौता।

वियाना समझौता

अम्लीय–बारिश को खत्म करने के लिए अमरीका और कुछ यूरोपीय देशों के बीच हुआ समझौता।

लुप्त होती प्रजातियों के अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर समझौता

दुर्लभ और लुप्त होती प्रजातियों की खरीद–फ़रोख्त पर पाबंदी लगाने के बारे में समझौता।

मुझे पता नहीं था कि जीवों और पर्यावरण के बारे में इतने सारे समझौते हो चुके हैं!

और हम चाहें तो रोज़ ही कुछ–न–कुछ छोटी–मोटी मद्द कर सकते हैं।

और सचमुच में छठवीं कक्षा के बच्चों ने अल्युमीनियम के डिब्बों को इक्ट्ठा करना शुरू कर दिया!

मैंने पढ़ा है कि अगर हम पानी का सावधानी से उपयोग करें तो साल भर में हम, एक स्वीमिंग–पूल जितना पानी बचा सकते हैं!

पानी बचाने के बहुत सारे तरीके हैं...

नल की टोटी को बेकार में खुला मत छोड़ो। पानी ठंडा होने के बाद ही उसे फ़्रिज में रखो।

पानी बचाने के कुछ और सुझाव...

सभी इन तरीकों के बारे में जानते हैं!

मंजन करते समय नल को खुला मत छोड़ो। गिलास में पानी भर कर उससे मुंह धोओ।

नहाने के लिए एक झरन (शावर) लगाओ। इससे 50 लीटर पानी बचेगा!

क्या तुम्हें इकोमार्क (पर्यावरण–चिन्ह) के बारे में पता है?

हां, बिल्कुल!

यह चिन्ह पर्यावरण–मित्र वस्तुओं पर लगाया जाता है।

पृथ्वी और उपभोक्ता चेतना

पृथ्वी पर रहम करो!!

यह चिन्ह, कोआपरेटिव्स में बनीं, पर्यावरण–मित्र वस्तुओं पर लगाया जाता है।

जापान में कोआपरेटिव्स, इस चिन्ह को उपयोग करती हैं।

यह चिन्ह जापान में इस्तेमाल होता है।

जिन वस्तुओं पर पर्यावरण सुरक्षा का लेबिल लगा हो उन्हें ही खरीदना अच्छा है। क्योंकि इससे प्राकृतिक संपदा का संरक्षण होगा और ओज़ोन को नुकसान नहीं होगा।

हर महीने की 20 तारीख को बहुत से लोग अपनी कार नहीं चलाते हैं। वे कार को घर छोड़ देते हैं और सार्वजनिक यातायात का उपयोग करते हैं।

इसलिए, कागज़ भी बरबाद न करें। उसकी उल्टी सतह भी काम में लाएं। कागज़ कम इस्तेमाल करने से पेड़ भी कम ही कटेंगे!

पहले कुछ भी गल्ती होने से मैं कागज़ को फेंक देती थी.... पर अब नहीं!

आजकल पुराने अखबारों, दूध के कार्टन आदि को दुबारा इस्तेमाल (री–साईकिल) किया जाता है। इसके लिए आपको डिब्बों को सिर्फ चपटा करना होगा। पर्यावरण संरक्षण में यह पहला कदम है।

बाज़ार जाते समय आप कपड़े का थैला लेकर जाएं और दुकानदार से प्लास्टिक की थैली न लें।

तुम लोग बड़े अच्छे सुझाव दे रहे हो!

हम लोगों ने पृथ्वी को बचाने की कसम खाई है!

अब जाकर मेरा काम पूरा हुआ!
क्योंकि तुम लोग नींद से जाग गए हो इसलिए मैं अब चलता हूं। अलविदा!
ज़रा रुको!!
धम्म!
ऐसा लगता है कि हमारा मित्र सच में चला गया!
उसने हमें कितनी अच्छी बातें सिखायीं!!
पृथ्वी के रहस्य

उसके बाद क्या हुआ?

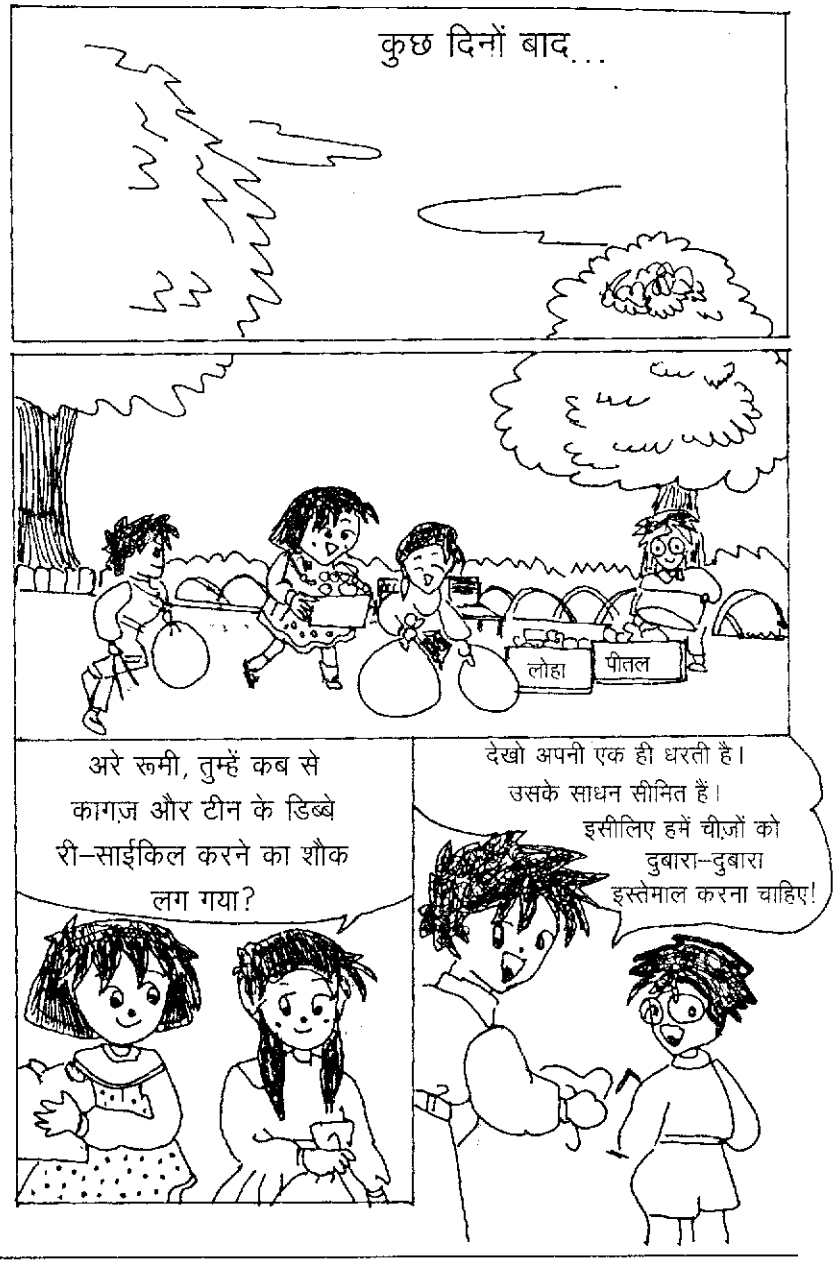
कुछ दिनों बाद...
लोहा
पीतल
अरे रूमी, तुम्हें कब से कागज़ और टीन के डिब्बे री–साईकिल करने का शौक लग गया?
देखो अपनी एक ही धरती है। उसके साधन सीमित हैं। इसीलिए हमें चीज़ों को दुबारा–दुबारा इस्तेमाल करना चाहिए!

आखिरी अपील

इस किताब को लिखते समय मैं लगातार अफ्रीका और दक्षिण–पूर्वी एशिया में रह रहे बच्चों के बारे में सोच रही थी। इन देशों में बहुत से बच्चों को, परिवार पालने के लिए स्कूल छोड़ना पड़ता है। यह बड़े दुख की बात है। अधूरी शिक्षा के कारण वो जीवन में बहुत आगे नहीं जा पाएंगे। वैसे स्कूल एक बड़ी मज़ेदार जगह है! स्कूल में बच्चों को तमाम रोचक बातें सीखने को मिलती हैं। बच्चे तभी स्कूल जा पाएंगे जब दुनिया में युद्ध बंद होंगे और जब सब गरीब लोगों का जीवन–स्तर ऊपर उठेगा। मुझे पता है कि मैं बड़ी खुशनसीब हूं – मैं जब तक चाहूं स्कूल में पढ़ सकती हूं। मुझे दिन में तीन बार पेट भरकर खाना मिलता है और मैं मज़े से एक आरामदायक घर में रहती हूं। अगर संभव होगा तो मैं अपने जीवन में ऐसा कुछ ज़रूर करूंगी जिससे कि गरीब और अमीर देशों के बीच में एक पुल बने। अगर मैं खूब लगन से पढ़ूं और बड़े होने पर एक डाक्टर बनूं तो शायद मैं अपने इस सपने को साकार कर पाऊं।

जहां तक पर्यावरण की बात है – लोगों को यह नहीं सोचना चाहिए कि वो अकेले हैं और अकेला इंसान भला कैसे कुछ परिवर्तन ला सकता है। अगर सभी लोग इस तरह सोचेंगे तो पृथ्वी का भविष्य अंधकार में डूब जाएगा।

अगर सब लोग मिलकर सहयोग का हाथ बंटाएंगे तो हम निश्चित ही अपनी पृथ्वी को एक सुंदर जगह बना पाएंगे।

समुद्रों को बचाओ

पर्यावरण की समस्याएं अब इतनी गंभीर हो गई हैं कि वो सारी दुनिया को प्रभावित करती हैं। विज्ञान की प्रगति ने विकसित देशों में रहने वाले लोगों को अनेकों सुख–सुविधाएं उपलब्ध कराई हैं। परंतु अब लगता है कि इस सुख–वैभव के लिए हमें एक बड़ा मूल्य चुकाना पड़ा है। अब पर्यावरण से जुड़ी अनेकों समस्याएं, एक–साथ अपना सिर ऊपर उठा रही हैं – ग्रीनहाउस प्रभाव, ओज़ोन की छतरी में छेद, कचरे–मलबे के पहाड़ और दूषित होते महासागर। अच्छी बात यह है कि लोग इस असलियत को पहचान रहे हैं। परंतु बहुत कम लोगों को ही इन समस्याओं की गंभीरता का अनुमान है। और केवल चंद ही लोग इससे निबटने के लिए कुछ ठोस कदम उठा रहे हैं।

समुद्रों से अगर किसी एक देश को सबसे अधिक लाभ पहुंचा है तो वो देश है जापान। हज़ारों सालों से जापानियों को, जीवनदायी समुद्रों से मछलियां और समुद्री पौधें मिल रहे हैं। समुद्री जहाज़ों द्वारा ही देशों के बीच संपर्क और व्यापार बढ़ा है। अनगिनत पीढ़ियों को, समुद्र की अलौकिक छटा ने अपनी ओर आकर्षित किया है। समुद्र की सुरक्षा के कारण ही बहुत से देश हमलों से बचे हैं। सौरमंडल में हमारी पृथ्वी का एक विशेष स्थान है। धरती की 70 प्रतिशत सतह पानी से घिरी है। अगर पृथ्वी का नाम बदल कर पानी–ग्रह रख दिया जाए तो अच्छा होगा। शायद हम लोग इन अथाह नीले सागरों के इतने आदी हो चुके हैं कि हमें अब उनकी देखरेख की कोई फ़िक्र ही नहीं रह गई है।

अब लोग, दुनिया का शोषण करने की बजाए, विश्व संरक्षण की ओर बढ़ रहे हैं। अगर हम इसी तरह समुद्रों को दूषित करते रहे, तो हमारे बच्चों और नाती–पोतों को, समुद्रों की सुंदरता और उनके ऊपर के निर्मल आकाश की छटा को निहारने का मौका ही नहीं मिलेगा।

यही संदेश समुद्रों को बचाओ आंदोलन, सारी दुनिया को देना चाहता है। हम सोए लोगों को नींद से जगाकर उन्हें समस्या की गंभीरता से अवगत कराना चाहते हैं। जब बहुत से लोग एक–साथ मिलकर, पर्यावरण के मुद्दों पर अपना ध्यान केंद्रित करेंगे, तभी समस्या का हल निकलेगा।

समुद्र बचाओ आंदोलन समिति, जापान
कियोशी अवाज़ू चेयरमैन

समुद्रों का संदेश

जियो मगर प्यार से

जीवन देने वाले समुद्र के साथ प्यार से,
दुलार से बात करो।
समुद्र की धीमी आवाज़ को, हवा की गूंज को
और जीवन की विविधता को आहिस्ता–आहिस्ता सुनो।

समुद्र और उसमें रहने वाले जीवों से प्रेम करो।
भिन्न–भिन्न मछलियों और व्हेलों को पहचानो।
समुद्र के अलौकिक जीवन को जानो।

दुनिया के महासागरों की गोद में ही जीवन का प्रारंभ हुआ था।
उन्हें दूषित करने का हमें कोई हक नहीं है।

हम सभी लोग प्रकृति का हिस्सा हैं।
प्रकृति को दूषित कर हम खुद को ही कलंकित करते हैं।

अब समय है कोई ठोस कदम उठाने का।

अपनी बात को साफ़ और बुलंद शब्दों में कहो,
जिससे कि समुद्रों को बचाने का संदेश सारे संसार में गूंजे।

समुद्र को बचाओ

समुद्र बचाओ
हवा बचाओ
बारिश बचाओ
मेरे लोगों, मेरे मित्रों
क्या तुमने जीवन की धड़कन नहीं सुनी?
मेरे लोगों, मेरे मित्रों
क्या तुमने जीवन का रोना नहीं सुना?
मेरे लोगों, मेरे मित्रों
समुद्र बचाओ
हवा बचाओ
बारिश बचाओ

जंगल बचाओ
नदियां बचाओ
धरती बचाओ
मेरे लोगों, मेरे मित्रों
क्या तुमने जीवन की धड़कन नहीं सुनी?
मेरे लोगों, मेरे मित्रों
क्या तुमने जीवन का रोना नहीं सुना?
मेरे लोगों, मेरे मित्रों
जंगल बचाओ
नदियां बचाओ
बारिश बचाओ

''माहयाह''